100 ज़िना

असबाब और नुक़्सानात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़े अल्लाह तआला के लिए है जो सारे जहान का पालनहार हैं हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

व बअद।

ज़िना बड़े गुनाहों में से है। इस्लाम में इसकी सज़ा भी सख़्त हैं इर्शादे बारी तआला है " अल्लाह के नेक बन्दें ज़िना नहीं करते।" **(फुरकान–आयत–68&मआरिज–आयत–29)** "ज़िना के क़रीब भी मत जाओ यक़ीनन यह बड़ी बे हयाई और बुरा रास्ता है।"**(इस्रा–आयत–32)**

इसीलिए दीने इस्लाम ने ज़िना तक ले जाने वाले रास्तों को भी बन्द किया और पर्दा करने व निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया और किसी न मेहरम से अकेले में मिलने से मना किया। इस जुर्म की दुनियावी सज़ा भी दिल हिला देने वाली है। वह यह कि "अगर कुआंरा (या कुंआरी) ज़िना करे तो सौ कोड़े मारना और एक साल के लिए जिला वतन करना है और अगर शादी–शुदा यह गुनाह करे तो एक भरे मजमें में उसे ज़मीन में आधा गाड़ कर उस वक़्त तक पत्थरों से मारना है, जब तक कि वह मर न जा जाए।" **(तिर्मिज़ी–1283)**

ज़िना का आम हो जाना क़यामत की निशानियों में से है रसूल सल्ल0 का इर्शाद है "क़यामत की निशानियों में से यह है कि इल्म उठ जाएगा, जहालत बढ़ जाएगी, ज़िना की कसरत (बढ़ौत्तरी) हो जाएगी शराब का पीना आम हो जाएगा मर्दों की तादाद कम और औरतों की संख्या ज़्यादा हो जाएगी।"**(बुख़ारी–5231&तिर्मिज़ी–2012)**

इस फोल्डर में हम यही जानने की कोशिश करेंगे कि लोगों के इस जुर्म में फंसने के क्या असबाब हैं? और इस गुनाह के नुक़्सानात क्या हैं?

ज़िना के असबाब

(1) रहबानियत व तर्के निकाह:– अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "जो शख़्स अल्लाह से पाकीजगी की हालत में मिलना चाहे उसे चाहिये कि पाकदामन आज़ाद औरतों से निकाह करे।" **(इब्ने माजा–1862–ज़ईफ)** "ऐ नौजवानों की जमाअत! तुममें से जो शादी करने की ताकत रखता हो वह शादी करे। क्योंकि निकाह नज़रों को नीची रखता है और शर्म गाहों की हिफ़ाजत करता हे।" **(मुस्लिम–3398&बुख़ारी –5065&अबुदाऊद –2046 & इब्ने माजा–1845)**

"निकाह करों क्योंकि शादी से दो ही चीजें रोकती हैं
(1) आजिज़ी व बेबसी और (2) बदकारी व ज़िनाकारी।"
(कन्जुल उम्माल & अल मुग़नी)

देखने में यही आता है कि इस गुनाह में पड़ने वाले ज़्यादातर लोग कुंवारे होते हैं या रहबानियत की ज़िन्दगी बसर करने वाले। वोह इसलिए कि जवान हो जाने के बाद काफ़ी अरसे तक जो लोग शादी नहीं करते उनकी

जि ख्वाहिशात और जिस्मानी जरूरत जाइज़ तरीक़े से पूरी न होने की वजह से जब मौक़ा मिलता है अपनी जिन्सी तस्कीन के लिए वो यह गुनाह कर बैठते हैं।

(2) एक से ज़्यादा निकाह न करना:– दीने इस्लाम में एक मर्द को एक साथ चार बीवियां तक रखने की इजाज़त है बशर्ते कि वह उनके बीच इन्साफ़ करे और उनके हुकूक़ को बेहतर तरीक़े से अदा कर सके। ताकि बदकारी व ज़िनाकारी से खुद भी बचा रहे और समाज में भी बुराई व बेहयाई पनपने का मौका न मिले। वोह इसलिए कि औरत कभी बांझ होती है तो कभी ला इलाज बीमारी की शिकार हो जाती है। कई इलाको में औरतों की तादाद मर्दो से ज़्यादा होती है तो कहीं मर्द के पास औरत से ज़्यादा जिन्सी मिलाप की चाहत पाई जाती है। यूं भी मर्द में जिन्सी चाहत अमूमन आख़िरी उम्र तक रहती है जबकि औरतों में यह चाहत 50–55 साल की उम्र होने पर ख़त्म सी हो जाती है। इसके अलावा हैज़ व निफ़ास की हालत में दीने इस्लाम इस अमल की इजाज़त नहीं देता और हालते हमल और बच्चे को दूध पिलाने के अरसे में इस अमल से मुमकिना हद तक बचा जाता है। ऐसे में सिर्फ एक बीवी होने की हालत में जो मर्द अपनी जिन्सी ख़्वाहिशात पर कन्ट्रोल नहीं कर पाते, वोह ज़िनाकारी में पड़ जाते हैं। इर्शादे बारी है "जो औरतें तुम्हें पसन्द हों उनसे निकाह करलो। दो–दो तीन–तीन और चार तक भी इजाज़त है, बशर्ते कि उनमें इन्साफ़ कर सको। वरना एक ही काफी है।" **(निसा–आयत–3)**

(3) बे पर्दगी:– आज आम तौर पर यह नज़र आता है कि जवान लड़की या औरत तो खुले चेहरे के साथ बाज़ार में चलती–फिरती नजर आती है और उसके साथ चलने वाली अधेड़ उम्र या बूढ़ी औरत मुकम्मल पर्दे में होती है। जबकि पर्दा करने का हुक्म सब के लिए है। क्योंकि बापर्दा निकलने से उनकी शरीफ़ाना तबीयत की पहचान होती है जिसकी वजह से कोई उन्हें छेड़ता भी नहीं है। वो बीमार निगाहों व शहवानी दिलों के जज़बात से अक्सर महफ़ूज़ रहती हैं जो कि उनकी खूब सूरती व बनाव सिघांर नज़र आने पर मुश्किल होता है। शैतान को भी अपना दाव चलने का मौका नहीं मिलता। इर्शादे बारी है "मुसलमान औरतों से कहों कि वोह अपनी निगाहें नीची रखें, अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें और अपने पर चादर डाले रहें।" **(नूर–आयत–31)** क्योंकि "औरत जब बे पर्दा निकलती है तो शैतान उससे शैतानियां करवाता है और अपना खेल खेलता है।" **(तिर्मिज़ी–1037)** और वोह औरतें जो ऐसे तंग या बारीक कपड़े पहन कर बेपर्दा बाहर निकलती हैं जिनसे उनका जिस्म या उसकी बनावट नज़र आती है, पर लअनत करते हुए रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "वो औरतें जो कपड़े पहन कर भी नंगी नज़र आती हैं। खुद दूसरों की तरफ मायल होती हैं और दूसरों का ध्यान अपनी तरफ खींचती हैं। ऊंट के कोहान की तरह हैं ऐसी औरतें जन्नत में नहीं जाएंगी बल्कि वो जन्नत की खुश्बू तक नहीं पाएंगी। हालांकि उसकी खुश्बू इतनी–इतनी दूरी से मेहसूस की जाएगी।" **(मुस्लिम–5861)**

(4) बेहयाई (बेशर्मी) बे पर्दगी सिर्फ नक़ाब न लगाने या चेहरा खुला रखने का नाम नहीं है। बल्कि असल बे पर्दगी बेहयाई व बेशर्मी से होती है। क्योंकि हया (शर्म) इन्सान को पाकदामन रखती है। उसकी तहारत व पाकीज़गी को परवान चढ़ाती हैं। हया एक रोशनी है जो अगर न हो तो ईमान का नूर व उसकी दमक ख़त्म हो जाती है। बेहयाई हर शर व फ़साद की बुनियाद है। हया गई तो हर खूबी गई। सच फरमाया रसूल सल्ल0 ने "जब तुम में हया

न हो तो जो चाहो करो।" (बुख़ारी–)

(5) नज़र बाज़ीः– ज़िना की एक वजह जहां नज़र बाज़ी है वहीं अजनबी (ग़ैर मेहरम) औरत को छूना, पकड़ना, हाथ मिलाना और गले लगना–लगाना भी हैं। किसी मर्द की नज़रे किसी औरत पर अगर इत्तेफ़ाक़ से पड़ जाए तो ख़ैर मगर क़सदन दुबारा देखना और नज़रे जमाए रखना गुनाह है। यह नज़र का ज़िना है। इसी तरह किसी ग़ैर औरत के जिस्म को छुना, उससे मुसाफ़ाह करना या उसे गले लगाना भी हराम है। नज़रे चाहे औरत के जिस्म पर डाली जाए या उसकी तस्वीर पर, इससे नफ़सानी शहवत में इज़ाफ़ा होता है, जिस्म में हीजान पैदा होता है जो ज़िना के लिए राह आसान कर देता है।

रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "निगाह पर निगाह न डालो क्योंकि पहली नज़र जाइज़ है, दूसरी नहीं।" **(अबुदाऊद–2149&तिर्मिज़ी–2555)**

आप सल्ल0 तो औरतों से बैअत लेते वक़्त भी उनसे मुसाफ़ाह नहीं किया करते थे।" **(अहमद–27546–सही)** मगर आज के माहौल में शादी ब्याह के मौक़ों पर कुछ जगह मर्द व औरतें न सिर्फ़ एक साथ नज़र आते हैं बल्कि एक–दूसरे से हाथ मिलाते व बग़लगीर होते भी दिखाई देते हैं। जबकि फ़रमाने रसूल सल्ल0 है "आंख का ज़िना देखना है ज़ुबान का ज़िना बात करना है, हाथ का ज़िना पकड़ना है, पैर का जिना चल कर जाना है और कान का ज़िना सुनना है नफ़्स तो चाहत व शहवत का इज़हार करता है और शर्मगाह उसे सच या झूट करती है।"

(मुस्लिम–6989&बुख़ारी–6243&अबुदाऊद–4904)

(6) तन्हाई (अकेले) में मिलनाः– किसी अजनबी मर्द व औरत का एक–दूसरे से तन्हाई में मिलना खुद पर शैतान को हमला करने का मौक़ा देना है। इसलिए कि "कोई शख़्स जब किसी अजनबी औरत से अकेले में मिलता है तो उन दोनों के बीच तीसरा शैतान होता है।" **(तिर्मिज़ी–1036)** कुछ ऐसी भी औरतें हैं जो आम अजनबी मर्दों से तो पर्दा करती हैं मगर शौहर व दामाद के क़रीबीयों से पर्दा नहीं करती उनसे तन्हाई में खुले चेहरे व ज़ीनत के साथ मिलती हैं जबकि रसूल सल्ल0 ने हर ग़ैर मेहरम से यहां तक कि देवर से भी तन्हाई में मिलने से मना किया हैं।" **(तिर्मिज़ी–1035)** इसलिए कि किसी मर्द व औरत का यह बेहिजाबाना मिलन ज़िना के लिए उभार सकता है।

(7) मैल–जोल व आज़ादाना मुलाक़ातः– अजनबी मर्द व औरत का आज़ादाना मिलना–जुलना, बात चीत करना, हंसी–मज़ाक़ व दिल्लगी करना भी ज़िना के असबाब में से है। इसलिए कि मैल जोल जितना बढ़ेगा उतना ही बेतकल्लुफ़ी में इज़ाफ़ा होगा। जिससे जिन्सी जुनून व शहवत को बढ़ावा मिलेगा। और मामला ज़िना तक जा पहुंचेगा। मौजूदा ज़माने में जिना की औलाद में इज़ाफ़ा, हमल को गिराना (एबार्शन) लड़ाई–झगड़ा और क़त्ल की वारदातें इसी आज़ादाना मेल जोल के नतीजे है अगर मानेअ हमल व इस्क़ाते हमल की दवाओं का इस्तेमाल न हो तो हम अपने बीच हरामी व नाजाइज़ औलाद की अच्छी ख़ासी तादाद देखें।

(8) नाच–गानेः– चूंकि गाना व मौसिकी शैतान के हथियारों में से हैं। इनकी ज़द में आकर इन्सान का दिल बुराई की तरफ़ मायल होता है। औरत की सुरीली आवाज़, जिन्सी जज़्बात को उभारने वाले बोल और संगीत शहवत में पेट्रोल का काम करते हैं। इस नाच–गाने की बुराई के लिए यही काफ़ी है कि यह शैतान मरदूद का बड़ा हथियार है। यह ज़िना के लिए उकसाता है। फ़रमाने रसूल सल्ल0 है "क़यामत के क़रीब मेरी उम्मत में से

कुछ लोग ऐसे होंगें शर्मगाह, रेशम, शराब और गाने–बजाने को हलाल समझेंगे।" (यानि इन्हें गुनाह नहीं जानेंगे) **(बुखारी–5590)** एक दुश्मने इस्लाम का बयान है कि " शराब का एक जाम और गायिका का गाना उम्मते मुहम्मद (सल्ल0) को बर्बाद करने में वोह किरदार अदा करेंगें जो तोप के एक हज़ार गोले भी नहीं कर सकते।" "गाना दिल में निफाक पैदा करता है।" **(अबुदाऊद–4927)** और हम हैं कि इसे रूह की गिज़ा समझे बैठे हैं।

(9) फ़िल्म देखनाः– ऐसी फ़िल्में देखना जिनमें मर्द व औरत लिपटते–चिपटते व एक–दुसरे का बोसा (चुंबन) लेते और नाचते–गाते नज़र आते हैं भी तबियत को जिन्सी जराइम और शहवानी अमल करने पर उकसाते हैं। जब कोई शख़्स एक दफ़ा जिना कर लेता है तो यह चस्का उसे इस दल दल से निकलने नहीं देता फिर आजकल तो पोर्न फ़िल्में भी आम हैं जिन्हें देखने से ज़हन ख़राब होता है और ज़िना की चाहत कई गुना बढ़ जाती है। रसूल सल्ल0 का फ़रमान है "मर्द मर्द की शर्मगाह न देखे व औरत औरत की शर्मगाह न देखे और एक लिहाफ़ में मर्द मर्द के साथ व औरत औरत के साथ न सोए।" **(मुस्लिम–768&इब्नेमाजा–661)**

(10) फ़हश तहरीरेंः–ज़िना कारी का एक सबब फ़हश लिट्रेचर, जिन्सी डायजेस्ट, लचर मज़ामीन और फ्री सेक्स के जो वसाइल व ज़राए आज इस्तेमाल किये जा रहे हैं भी हैं। बेहूदा अशआर व गन्दें मज़ामीन से भरी किताबें जो बा आसानी चौराहों, बस स्टेण्डों व रेल्वे प्लेटफार्मों पर मिल जाती हैं, ज़िनाकारी का रूझान पैदा करती हैं। यह न सिर्फ़ जवान लड़के लड़कियां बल्कि अधेड़ उम्र के मर्द व औरतों को भी इस बुराई के लिए आमादा करती हैं। कभी यह चीज़ें इन्सान को इतना पागल बना देती हैं कि वो शहवत पूरी करने के लिए कमसिन बच्चे व बच्चियों तक को अपनी हवस का शिकार बना डालतें हैं।

(11) दिल से अल्लाह का डर जाते रहना व बुरी संगतः– अल्लाह का खौफ़ व उसके अज़ाब का डर दिल से निकल जाना और बुरी सोहबत भी इस बुराई का एक सबब है।

ज़िना के नुक्सानात

(1) जानलेवा बीमारियों का लगनाः– औरतों का आपस में लुत्फ़ अन्दोज़ होना और मर्दों का औरतों से ज़िना करना जिस्मानी कूवत में कमी पैदा करता है। जवानी को बुढ़ापे में बदल देता है। हत्ता कि बांझ व नामर्द बना कर छोड़ता है। एडस जैसी जानलेवा बीमारी भी इसी का नतीजा है।

(2) जिना से मौतें ज़्यादा होती हैंः–हर खास व आम जब ज़िना करने लगता है तो मौतें भी ज़्यादा होने लगती हैं। फरमाने रसूल सल्ल0 है "जब किसी कौम ने वादों को तोड़ा है तो आपस में कत्ल करने का सिलसिला शुरू हुआ है और जब किसी कौम में ज़िना कारी आम होती है तो अल्लाह उस पर मौत मुसल्लतकर देता है और जब कौम जकात की अदायगी नही करती तो अल्लाह अपनी बारिश रोक लेता है।" **(मुस्तादरक हाकिम)**

(3) अल्लाह का अजाब आम हो जाता हैः– बदकारी जब आम हो जाती है और ज़िना खुले आम होने लगता है तो अल्लाह का अजाब भी आए दिन नाज़िल होने लगता है। फरमाने रसूल सल्ल0 है "मेरी उम्मत उस वक़्त तक ख़ैर व भलाई में रहेगी जब तक कि उनमें जिनाकारी आम न होगी। जब बेहयाई आम हो जाएगी तो करीब है कि अल्लाह उन पर अपना अजाब आम

कर दे।"
(अहमद–27367–हसन)
किसी बस्ती व कौम में सूद खोरी व ज़िनाकारी आम नहीं हुई कि उन्होंने अपने आप पर अल्लाह का अजाब नाज़िल करा लिया।" **(मुसनद अबियअला)** इर्शादे बारी है "लोगों! ऐसे फ़ित्ने से बचो जो सिर्फ़ ज़ालिमों के साथ खास नहीं होगा और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।" **(अनफ़ाल–आयत–25)**

(4) निकाह करने को दिल नहीं चाहता:– कोई शख़्स जब अपनी नफ़्सानी व जिन्सी ख़्वाहिशात को ग़ैर शरईतौर पर पूरा करने लगता है और उसे ज़िनाकारी की लत पड जाती है तो फिर वह शादी करने की चाहत नहीं रखता। निकाह करने से बचता है और अपनी ज़िन्दगी हराम कारी ही में बिता कर बीवी, औलाद, ससुराल वग़ैरह रिश्तों से मेहरूम रहता है इस तरह दुनिया से जाने के बाद उसका कोई नाम लेवा नहीं रहता।

अगर ज़ानी शादी–शुदा हो तो बीवी में उस की दिलचस्पी कम होने लगती है या कभी बिल्कुल ख़त्म हो जाती है और नौबत तलाक़ तक जा पहुंचती है।

(5) नाहक़ जिस्मानी क़त्ल:– ज़िना कई किस्म के क़त्लों को जन्म देता है कभी एक मासूम जान का नाहक़ खून किया जाता है। जब ज़ानी मर्द व औरत अपनी ख़्वाहिश व हवस पूरी करने के बाद अपनी–अपनी जिम्मेदारियों से बचते हैं तो हमल की रोक–थाम के सारे ज़राए इस्तेमाल किये जाते हैं अगर इसके बावजूद हमल ठहर जाए तो उसे गिराने व ज़ाया करने की कोशिशें की जाती हैं फिर भी अगर बच्चा पैदा हो जाए तो बड़ी बेदर्दी से उसे किसी सुन सान जगह पर मरने के लिए फैंक दिया जाता है। इस तरह एक बच्चा नाहक़ मौत का शिकार हो जाता है।

(6) नफ़्सयाती कत्ल:– ज़िना से पैदा होने वाला बच्चा अगर नाहक़ मौत से बच कर जवानी की उमर को पहुंच जाता है और जान लेता है कि वह अपनी मां की ज़िनाकारी का नतीजा है तो ज़हनी व नफ़्सयाती तौर पर खुद को मुर्दा मेहसूस करने लगता है। समाज में उसे घटिया व तिरछी नज़रों से देखा जाता है। हर जगह उसे जिल्लत का सामना करना पड़ता है। कोई उसे हरामी कहता है तो कोई उंगली या आंखों के इशारे करके उसकी बे इज़्ज़ती करता है। अगर कहीं बात खुल जाए और उसके ना जाइज़ बाप का पता चल जाए तो उससे नाम जोड़ कर उसे ताने व तक्लीफ़ें दी जाती हैं। ऐसी औलाद की शादी होना एक बड़ा मसअला बन जाता है। ग़रज़ कि ज़िना के ज़रिये वजूद में आने वाला बच्चा सारी ज़िन्दगी ज़हनी तौर पर मरा हुआ रहता हैं

(7) समाजी क़त्ल:– ज़िना से वजूद में आने वाला बच्चा जब खुद को बाप से मेहरूम पाता है और मां भी मुख़लिसाना ज़ज़्बे के साथ उसकी परवरिश नहीं करती है तो ऐसा बच्चा समाजी मुश्किलात का सामान करते व परेशानियां झेलते एक घुटन भरी ज़िन्दगी गुज़ारता है। समाज उसे इज़्ज़त नहीं देता कभी वह सब से कट कर अलग–थलग रहते हुए खुद को मरा हुआ सा मेहसूस करता है। कभी ऐसा भी होता है कि बुरी संगत में पड़ कर खुद बुरा बनजाता है और ज़िनाकारी करके समाज से बदला लेने लगता है।

(8) बाहमी क़त्ल:– इन्सान चूंकि फ़ितरी तौर पर ग़ैरतमन्द होता है इसलिए कोई शरीफ़ आदमी यह पसन्द नहीं करता कि कोई उसकी मां, बहन, बेटी,

ख़ाला या फूफी से ज़िना करे या उनके साथ ना जाइज़ तअल्लुकात बनाए। अगर कोई ऐसा कर गुज़रता है तो उसकी ग़ैरत उसे उस ज़ानी के क़त्ल पर उभारती है और ऐसा करके वह अपनी ग़ैरतमन्दी का सुबूत देता है। ज़िना कभी अपने ही घर की उस औरत के क़त्ल की वजह भी बनजाता है जो यह जुर्म करती है और ख़ानदान को बदनाम व रूसवा करने की वजह बनती है।

(9) दीगर (दूसरे) नुक़सानात:– 'बैहक़ी' की एक रिवायत में है कि रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "ज़िना से बचो। क्योंकि (1) ज़िना चेहरे की चमक व रौनक़ ख़त्म कर देता है। (2) फ़ाक़ा व ग़रीबी लाता है। (3) उमर को कम कर देता है। (4) अल्लाह को नाराज़ करता है। (5) बुरेहिसाब का ज़रिया है और (6) अज़ाबे जहन्नम का सबब है।"

इसके अलावा यह कि ज़िना की वजह से शादी–शुदा ज़िन्दगी में दरार पड़ जाती है। बच्चों की तरबीयत पर बुरा असर पड़ता है जिससे वोह बुरी सोहबत में पड़ जाते हैं। किसी औरत की बदकारी व धोखे की वजह से जो हमल रह जाता है उसके पैदा हो जाने पर उस बचचे की परवरिश नाहक़ तौर पर शौहर को करना पड़ती है।

(10) तिब्बी व अख़लाक़ी नुक्सानात:– ज़िना की वजह से सीलाने रहम, लकवा, सीने की घुटन, गठिया, बालों का झड़ना, बांझपन, लिंग में सूजिश और एडस वग़ैरह बीमारियां हो जाती हैं। कभी बच्चों को अन्धा, गूगां, बहरा या कम अक़्ल पैदा होने की वजह भी ज़िना होता है। हर ज़ानी इन बीमारियों का सामना करे यह ज़रूरी नहीं लेकिन अख़लाक़ी कमज़ोरियों का सामना हर एक करता है। बेहयाई, धोखेबाज़ी, झूट, बदनीयती, खुदगरज़ी, ख़्वाहिशात की गुलामी और ख़्यालात की आवारगी यह सब ज़िना ही के नताइज हैं।

(11) ग़रीबी आती है:– कोई शख़्स जब इश्क़ में गिरफ़्तार हो कर शहवत परस्ती के जाल में फंस जाता है तो फिर उसे पाने के लिए जो भी माल ख़र्च करना पड़े, करता है और दौलत लुटाता जाता है। यहां तक कि एक दिन कंगाल हो जाता है। उसकी ज़िन्दगी उस पर तंग हो जाती है और आप सल्ल0 की यह बात उस पर सादिक़ आती है कि "हराम करने वाले आख़िर कार मोहताज हो जाते हैं। चाहे मर्द हों या औरत" **(मुसनद बज़ार)**

(12) बूढ़े ज़ानी का अल्लाह की नज़रों से गिरना:– ज़िनाकार अल्लाह की नज़रों से गिर जाता है। फ़रमाने रसूल सल्ल0 है "तीन तरह के लोगों से क़यामत के दिन अल्लाह बात नहीं करेगा न उन्हें पाक करेगा और न उन पर रहमत की नजर डालेगा बल्कि उन्हें दर्द नाक अज़ाब देगा। उन तीन में से एक बूढ़ा ज़ानी है" (बूढ़ा मर्द या बूढ़ी औरत जो ज़िना करे।) (मुस्लिम–296)

अल्लाह से दुआ है कि वह हम सभी को इस बदकारी से महफ़ूज़ रखे। हमारी ख़ताओं व गुनाहों को माफ फरमाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9887239649
9214836639